Restoring students union at Banaras Hindu University

डा. संजय सिंह (असम) : माननीय उपसभापति जी, पूरे सदन को, हमको, आपको, सबको अपने लोकतंत्र पर विश्वास है और उस पर गर्व है। इसकी ताकत पर सभी विश्वास करते हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी, जिनकी शुरुआत एक चाय वाले से हुई, अभी हाल ही के चुनाव में उन्होंने देश के सर्वोच्च पद को प्राप्त किया। यह अपने देश के लोकतंत्र की ताकत का एक उदाहरण है। मैं एक बहुत गम्भीर प्रश्न पर आपका ध्यानाकर्षण करना चाहता हूँ। माननीय प्रधान मंत्री जी का अपना लोक सभा क्षेत्र और उत्तर प्रदेश की जमीन राजनैतिक तौर से बड़ी उर्वरा है। हमारे प्रदेश ने बहुत सारे प्रधान मंत्री दिए। माननीय वर्तमान प्रधान मंत्री जी उत्तर प्रदेश से ही आए हैं। यह और भी सम्मानजनक बात है। उनके उसी क्षेत्र में एशिया का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय है, जो 17 साल से अपने स्टूडेण्ट यूनियन के चुनाव के लिए तरस रहा है। आज हमारे देश में 65 प्रतिशत आबादी युवाओं की है। प्रधान मंत्री जी ने अपने देश में ही नहीं, दुनिया के बहुत सारे देशों में जाकर कहा कि "सबका साथ, सबका विकास" और उन्होंने हमारे युवाओं से बहुत सारे उत्साह की बात कही है। यह बात अजीब लगती है कि वहीं बीएचयू में 2014 में 20 अक्टूबर को इतना बड़ा लाठीचार्ज हुआ, जिसमें बहुत सारे लड़के घायल हुए। तमाम संघर्ष की ऐसी घटनाएँ समय-समय पर हुआ करती हैं। वहाँ पर लिंग्दोह समिति ने चुनाव के संबंध में जो सिफारिश की है, उसका भी पालन नहीं हुआ। वहाँ पर छात्र की काउंसिल बनाने की बात हुई, लेकिन 2-3 साल से वहाँ काउंसिल भी नहीं है। हमारे देश में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ने बहुत सारे ऐसे छात्र नेता दिए, जो हमारे यहाँ राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हैं और हमारे देश में राजनीति का एक अच्छा मार्ग प्रशस्त करते हैं। अभी हाल ही में हमारे देश में पंडित मदन मोहन मालवीय जी को भारत रत्न दिया गया, जो बहुत ही प्रशंसनीय है, वंदनीय है।

महोदय, मैं माननीय सदन के माध्यम से यह कहना चाहता हूं, हमारी एचआरडी मिनिस्टर भी यहां बैठी हुई हैं, मैं उनसे भी निवेदन करना चाहता हूं, क्योंकि उन्होंने भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में विज़िट किया था, वहां पर विद्यार्थियों ने इनको मेमोरेंडम दिया और निवेदन भी किया और वहां की सारी घटनाओं की जानकारी आपको है।

माननीय उपसभापति जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री जी एवं माननीय प्रधान मंत्री जी से भी अनुरोध करना चाहता हूं कि वहां के इन हालात को देखते हुए, आज इस सदन में उनको वक्तव्य देना चाहिए और हम सबको आश्वस्त करना चाहिए कि लोकतन्त्र की हमारी जो परम्पराएं हैं, तमाम छात्र नेताओं के माध्यम से समय-समय पर हमारे देश को नेता मिलते रहे हैं ...**(समय की घंटी)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay; time over.

डा. संजय सिंह : बीएचयू के हमारे विद्यार्थियों में फिर से वही पुरानी, यूनियन के चुनाव की प्रक्रिया चालू हो।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Time over. Members may associate.

चौधरी मुनव्वर सलीम (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं इनके उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

† چودھری منور سلیم (اترپردیش) : مہودے، میں ان کے الیکھ سے خود کو سمبدّ کرتا ہوں۔

SHRI ANANDA BHASKAR RAPOLU (Telangana): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

श्री आलोक तिवारी (उत्तर प्रदेश): सर, मैं इनके उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

श्री अरविन्द कुमार सिंह (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं इनके उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

श्री नीरज शेखर (उत्तर प्रदेश) : सर, मैं इनके उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

SHRI RITABRATA BANERJEE (West Bengal): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI): Sir, I just want to make...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: She wishes to react.

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी: सर, मैं माननीय सदस्य की एक बात की तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं। इन्होंने कहा कि लाठीचार्ज में कई छात्र मारे गए हैं, यह खबर गलत है। इस सदन में यह गलत खबर न फैले इसीलिए उठकर मैंने ...**(व्यवधान)**...

श्री प्रमोद तिवारी (उत्तर प्रदेश) : इन्होंने यह नहीं कहा। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी : प्रमोद जी, मैंने यह बात स्वयं सुनी है। उन्होंने यह कहा कि वहां कई छात्र मरे हैं, उनका यह वाक्य सरासर गलत है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: All right. ...*(Interruptions)*... The lathi-charge was not done at the instruction of the Minister! ...*(Interruptions)*...

श्री आनंद भास्कर रापोलू (तेलंगाना) : माननीय मंत्री जी, वहां के चुनाव के बारे में भी तो बता दीजिए। ...**(व्यवधान)**...चुनाव के बारे में भी तो आप बता दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी : बीएचयू एक autonomous institution है और autonomous institution के Vice-Chancellor को पूरा अधिकार है कि अगर institution से सम्बन्धित कोई भी administrative निर्णय लेना हो, तो वह निर्णय institution स्वयं लेता है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay; that is clear.

डा. संजय सिंह : सर, वहां चुनाव को लेकर लगातार बहुत सारी घटनाएं हो रही हैं ...**(व्यवधान)**...बहुत सारे लोग चुनाव की डिमांड कर रहे हैं। ...**(व्यवधान)**...

†Transliteration in Urdu Script.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is clear. Now, Shri K. C. Tyagi. ...*(Interruptions)*... Shri K. C. Tyagi.

श्री नरेश अग्रवाल (उत्तर प्रदेश) : मंत्री जी, वह संवैधानिक संस्था नहीं है। **...(व्यवधान)...**आप उनको डायरेक्टिव दीजिए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. ...*(Interruptions)*... Nareshji, University is autonomous and Vice-Chancellor is the final authority; he can decide. This is all that she said...*(Interruptions)*...

श्री नरेश अग्रवाल : माननीय उपसभापति महोदय, इस देश में यह सोच बन गई है कि तमाम संवैधानिक संस्थाएं, तमाम autonomous bodies इंडिपेंडेंट हो गई हैं। उनका सरकार से कोई मतलब ही नहीं रहा है। इस सोच को कोई मानने वाला नहीं है।

श्री उपसभापति : यूनिवर्सिटीज़ को इंडिपेंडेंस है।

श्री नरेश अग्रवाल : सर, ऐसा नहीं है। माननीय मंत्री जी उनको पत्र लिखें, तब देखते हैं कि चुनाव कैसे नहीं होता है। **...(व्यवधान)...** श्रीमन्, यह बीएचयू का मामला है। बीएचयू विश्व स्तर की यूनिवर्सिटी है। मैं माननीय मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि आप वाइस चांसलर को डायरेक्शन दे दीजिए, उसके बाद यह काम हो जाएगा।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Should we tamper with the autonomy of the university? That is what you are saying!

श्री नरेश अग्रवाल : अरविन्द जी भी बीएचयू के छात्र रहे हैं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: All right. Shri K. C. Tyagi. ...*(Interruptions)*... Shri K. C. Tyagi.

Increasing cases of acid attacks on women

श्री के.सी. त्यागी (बिहार) : सर, पिछले दिनों महिलाओं पर तेज़ाब फेंकने की घटनाओं में बहुत वृद्धि हुई है। 'महिलाओं पर अत्याचार', 'महिलाओं का शोषण', ये शब्द बहुत कम और छोटे नज़र आते हैं, एक तेजाब की शिकार महिला के दर्द के सामने।

महोदय, तेजाब की जो घायल महिला है, उसका जिस्म ही नहीं, ज़हन भी छलनी हो जाता है। पिछले कई सौ वर्षों में महिलाओं में नया उत्थान और सोच पैदा हुई है, इसलिए यह कुंठित सभ्यता उसके विरुद्ध उस हथियार की तलाश में थी, जो बहुत आसानी से उपलब्ध हो और साथ ही उसकी चोट इतनी घातक हो कि पीड़ित महिला की आत्मा तक हिल जाए।

महोदय, कानून में ऐसी कोई भी धारा नहीं है, जो इस हथियार के इस्तेमाल पर किसी बड़ी सज़ा का प्रावधान रखती हो, इसीलिए शायद इस कुंठित सभ्यता ने बहुत सोच-विचार कर महिलाओं पर अत्याचार के लिए तेज़ाब जैसे हथियार को चुना होगा।